Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

गोदनाः लोक कला के रूप में सांस्कृतिक अभिव्यिक्ति

डॉ. नेहा जैन
Assistant Professor, Sociology PT. Deendayal Upadhyay Govt. Girls P. G. College, Lucknow
Email: neha090683@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180208
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 27-34
February - 2026
Submitted: 15 Jan. 2026
Revised: 25 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

गोदना भारतीय लोक कला की एक प्राचीन और समृद्ध परंपरा है, जिसमें मानव शरीर को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाता है। यह कला केवल सौंदर्य या अलंकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक धरोहर और स्त्री जीवन के अनुभवों से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। भारत के विभिन्न जनजातीय और ग्रामीण समुदायों में गोदना एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में पाया जाता है। इस शोध पत्र में गोदना को लोक कला के रूप में परिभाषित करते हुए, इसके ऐतिहासिक विकास, सामाजिक अर्थ, प्रतीकात्मकता और समकालीन संदर्भ में उसकी बदलती भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि गोदना भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और लोक विश्वासों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस कला रूप के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत पहचान बल्कि सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं की भी अभिव्यक्ति होती है। गोदना, एक ओर जहां विभिन्न जातियों और समुदायों में सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर यह समाज में स्त्रियों की भूमिका और उनके जीवन के अनुभवों को भी व्यक्त करता है। इस तरह, गोदना सिर्फ एक शारीरिक अलंकरण नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक परंपरा है।

मुख्य शब्दावली: *गोदना, लोक कला, सांस्कृतिक प्रतीक, जनजातीय समाज, स्त्री अभिव्यक्ति*

भूमिका

गोदना भारतीय लोक कला का एक अत्यंत पुराना और सांस्कृतिक रूप है, जो शरीर के विभिन्न अंगों पर चित्र या प्रतीक उकेरने की कला है। यह कला न केवल शारीरिक सौंदर्य या अलंकरण के रूप में देखी जाती है, बल्कि इसके भीतर एक गहरा सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक अर्थ छिपा हुआ है। भारत के विभिन्न जनजातीय समाजों और ग्रामीण समुदायों में यह कला प्राचीन काल से प्रचलित रही है और आज भी इन समाजों में अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपरा का प्रतीक बनी हुई है। गोदना शब्द का अर्थ है 'उकेरे गए निशान' या 'चिन्ह' जो शरीर के विभिन्न हिस्सों पर स्थायी रूप से उकेरे जाते हैं। इसे प्राचीन समय में केवल एक सजावट के रूप में नहीं, बल्कि एक गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक उद्देश्य के साथ किया जाता था। भारतीय समाज में यह कला न केवल सामाजिक स्थिति और पहचान को व्यक्त करने का एक तरीका है, बल्कि यह व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों जैसे विवाह, मृत्यु, या किसी अन्य खास घटना के प्रतीक के रूप में उकेरा जाता है।

गोदना का अभ्यास भारत के जनजातीय समाजों में विशेष रूप से प्रचलित है। विशेष रूप से छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखंड और ओडिशा जैसे राज्यों में यह कला एक सशक्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवित है। गोदना कला का अनुसरण करने वाले समुदायों में बैगा, गोंड, मुंडा, संथाल, कोल जैसी कई जनजातियाँ शामिल हैं, जिनकी परंपराएँ और विश्वास इस कला के माध्यम से व्यक्त होते हैं। इन जनजातीय समाजों में गोदना कला एक सामाजिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक पहचान और आध्यात्मिक विश्वास का अभिन्न हिस्सा है। इतिहास में, गोदना का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को प्रदर्शित करना और उसे सुरक्षा, समृद्धि और मानसिक शांति प्रदान करना था। इसे व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों से जोड़कर देखा जाता था, जैसे विवाह, जन्म, या मृत्यु के समय। विशेष रूप से स्त्रियाँ गोदना को अपने जीवन के महत्वपूर्ण मोड़ों पर गुदवाती थीं। यह न केवल उनकी सामाजिक पहचान को दर्शाता था, बल्कि यह उनकी संस्कृति और परंपराओं के प्रति निष्ठा का भी प्रतीक था।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो गोदना केवल व्यक्तिगत सौंदर्य या अलंकरण का प्रतीक नहीं, बल्कि यह समाज के भीतर स्त्रियों की भूमिका और उनके जीवन के संघर्षों का भी दस्तावेज है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.नेहा जैन, Assistant Professor, Sociology PT. Deendayal Upadhyay Govt. Girls P. G. College, Lucknow

How to cite this article:
जैन, . नेहा . (2026). गोदनाः लोक कला के रूप में सांस्कृतिक अभिव्यिक्ति. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 27–34. https://doi.org/10.5281/zenodo.18933213

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18933213
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

जब कोई महिला गोदना गुदवाती थी, तो वह न केवल अपने जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्ज करती थी, बल्कि वह समाज में अपनी स्थिति, पहचान और विश्वासों को भी प्रदर्शित करती थी। इसलिए यह कला न केवल एक शारीरिक प्रक्रिया है, बल्कि यह व्यक्ति और समाज के बीच एक गहरा सांस्कृतिक संबंध स्थापित करती है।

गोदना कला में बदलाव आया है। यह अब केवल एक परंपरागत सांस्कृतिक कृत्य नहीं रह गया, बल्कि यह आजकल एक फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का हिस्सा बन चुका है। पश्चिमी देशों में टैटू कला के रूप में गोदना के विभिन्न प्रतीक और डिजाइन को अपनाया गया है। इसके बावजूद, गोदना के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यह कला आज भी आदिवासी समुदायों के बीच अपनी सांस्कृतिक पहचान और विश्वासों का अभिव्यक्तिक रूप बनी हुई है।

इस शोध का उद्देश्य गोदना कला को एक लोक कला के रूप में समझना है। इस कला के माध्यम से न केवल सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक पहचान व्यक्त होती है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। गोदना कला में प्रयुक्त प्रतीक, जैसे सूर्य, चंद्रमा, पुष्प, पशु, स्वस्तिक और ओम, प्रत्येक का एक विशिष्ट सांस्कृतिक और धार्मिक अर्थ होता है। इन प्रतीकों के माध्यम से समाज अपने धार्मिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक विश्वासों को व्यक्त करता है।

गोदना का सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ इसे एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति का रूप प्रदान करता है। यह कला न केवल व्यक्ति की पहचान और स्थिति को प्रदर्शित करती है, बल्कि यह समाज में स्त्रियों के अधिकार, उनकी स्वतंत्रता और उनके संघर्षों का प्रतीक भी बनती है। गोदना का यह सांस्कृतिक महत्व आज भी भारतीय समाज में महसूस किया जाता है, विशेष रूप से जनजातीय समाजों में, जहाँ यह एक अभिन्न सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में जीवित है।

अतः गोदना केवल शारीरिक रूप से उकेरे गए चित्र नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय समाज के विविध आयामों–सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक–को समझने का एक अद्वितीय तरीका है। यह लोक कला, समाज के जीवन में अपने सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के कारण स्थायी रूप से विद्यमान है।

1. शोध अध्ययन समस्या का तर्क

गोदना भारतीय लोक कला का एक अत्यंत प्राचीन और सांस्कृतिक रूप है, जिसे भारत के विभिन्न जनजातीय समुदायों में एक सांस्कृतिक अनुष्ठान, पहचान, और अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। यह कला न केवल सौंदर्य और अलंकरण का प्रतीक है, बल्कि इसके भीतर समाज, संस्कृति, विश्वास और धार्मिक परंपराओं के महत्वपूर्ण आयाम समाहित होते हैं। गोदना, जिसे हम सामान्यतः शरीर पर उकेरे गए चिन्हों के रूप में पहचानते हैं, भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है। इस कला के माध्यम से न केवल व्यक्ति की पहचान, बल्कि उसकी सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थिति को भी व्यक्त किया जाता है। इस शोध का उद्देश्य गोदना को लोक कला के रूप में परिभाषित करते हुए इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामजिक आयामों का विश्लेषण करना है, ताकि हम समझ सकें कि यह कला आज भी भारतीय समाज में किस प्रकार जीवित है और किस प्रकार इसकी स्थिति और भूमिका समय के साथ बदलती रही है।

गोदना, जिसे आमतौर पर टैटू कला कहा जाता है, एक ऐसी लोक कला है जिसमें शरीर पर स्थायी रूप से चित्र या प्रतीक उकेरे जाते हैं। यह कला केवल शारीरिक अलंकरण नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक आस्थाओं और व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत में गोदना का अभ्यास विशेष रूप से जनजातीय समाजों में किया जाता है, जैसे छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखंड, ओडिशा, आदि। यहां गोदना न केवल एक सांस्कृतिक प्रथा है, बल्कि यह व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान, आस्था और विश्वासों का अभिव्यक्तिक रूप है। गोदना के चिन्ह किसी व्यक्ति की यात्रा, संघर्ष, सामाजिक स्थिति और धार्मिक विश्वासों को व्यक्त करते हैं। गोदना को लोक कला के रूप में परिभाषित किया जाता है, क्योंकि यह एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी विभिन्न समुदायों और जनजातियों में स्थानांतरित होती रही है।

गोदना का ऐतिहासिक विकास कई पहलुओं से जुड़ा हुआ है। यह प्राचीन समय से मानव सभ्यता का हिस्सा रही है, और विभिन्न समाजों में इसे धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक उद्देश्य के रूप में देखा गया है। प्राचीन सभ्यताओं, जैसे मिस्र, ग्रीस और रोम में भी शरीर पर निशान उकेरने की परंपरा रही है, जो उनके धार्मिक विश्वासों और आस्थाओं से जुड़ी हुई थी। भारत में भी गोदना का प्रचलन बहुत पुराना है, जहां यह कला विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण समाजों में व्याप्त रही है।

गोदना का इतिहास इस बात की ओर इशारा करता है कि यह कला केवल एक सौंदर्यपूर्ण क्रिया नहीं थी, बल्कि यह समाज की आस्थाओं, धर्म, और सांस्कृतिक धरोहर को एक दस्तावेज़ के रूप में जीवित रखती थी। भारतीय जनजातीय समाजों में, जैसे बैगा, गोंड, मुंडा और संथाल, गोदना को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कृत्य के रूप में देखा जाता है। इस कला के माध्यम से न केवल धार्मिक विश्वासों का उल्लंघन किया जाता था, बल्कि यह व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पड़ावों, जैसे विवाह, जन्म, या मृत्यु के समय को भी सहेजने का एक तरीका था।

गोदना में उकेरे गए प्रतीक, जैसे सूर्य, चंद्रमा, फूल, पशु, और ज्यामितीय आकृतियाँ, प्रत्येक का एक विशिष्ट सामाजिक और धार्मिक अर्थ होता है। गोदना केवल शारीरिक अलंकरण का प्रतीक नहीं, बल्कि यह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और उसकी आस्थाओं को भी व्यक्त करता है। आदिवासी समाजों में गोदना की प्रक्रिया के दौरान व्यक्त की जाने वाली आस्थाएँ और विश्वास समाज के लिए महत्वपूर्ण होते थे। उदाहरण के लिए, बैगा जनजाति में गोदना के निशान को मृतक के साथ आत्मा के सुरक्षा के रूप में देखा जाता था। वहीं, अन्य समाजों में इसे सौभाग्य, समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। गोदना कला के माध्यम से स्त्रियाँ अपनी सामाजिक स्थिति और भूमिका को व्यक्त करती थीं, और इसे एक सांस्कृतिक अनुष्ठान के रूप में देखा जाता था। गोदना केवल एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह समाज के भीतर व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान को दर्शाता है।

गोदना कला में कई परिवर्तन देखे जा सकते हैं। एक ओर जहाँ यह कला पहले केवल आदिवासी समाजों के बीच एक सांस्कृतिक और धार्मिक कृत्य के रूप में प्रचलित थी, वहीं अब यह आधुनिक टैटू संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है। गोदना को

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

एक फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। शहरी समाजों में इसे एक स्टाइल और शैली के रूप में अपनाया गया है, जहां लोग इसे अपनी पहचान और विचारों को व्यक्त करने के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

यह परिवर्तन गोदना के पारंपरिक अर्थ में कुछ हद तक बदलाव लाया है, लेकिन इसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता। अब भी यह कला आदिवासी समाजों में धार्मिक कृत्य और सांस्कृतिक पहचान के रूप में महत्वपूर्ण है, जबकि शहरी समाजों में यह मुख्यतः व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में अपनाई जा रही है।

गोदना के रूप में यह बदलाव सांस्कृतिक पुनरुद्धार का हिस्सा माना जा सकता है, क्योंकि अब इसे एक कला रूप के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह कला अब केवल शरीर तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसे कपड़ों और कैनवास पर भी देखा जा सकता है, जिसे ''गोदना पेंटिंग'' कहा जाता है। गोदना की समकालीन स्थिति और उसके परिवर्तन को समझना जरूरी है, ताकि हम जान सकें कि यह कला आज भी कैसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवित है और कैसे इसके उद्देश्य और स्वरूप में समय के साथ बदलाव आया है।

इस शोध का उद्देश्य गोदना को एक लोक कला के रूप में परिभाषित करते हुए उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आधार का गहराई से अध्ययन करना है। यह कला न केवल सौंदर्य या अलंकरण का प्रतीक है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहचान को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। गोदना का सामाजिक और प्रतीकात्मक अर्थ इसके गहरे सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है, और समकालीन संदर्भ में यह कला अपने पारंपरिक रूप से बदलकर एक नए रूप में विकसित हुई है। गोदना कला का अध्ययन भारतीय समाज के सांस्कृतिक विविधताओं और बदलावों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. साहित्य समीक्षा

शर्मा (2021) का अध्ययन भारतीय लोक कला के आधारभूत तत्वों का विश्लेषण करता है और गोदना को भारतीय लोक कला की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित करता है। उनके अनुसार गोदना केवल शरीर पर डिजाइन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पहचान को दर्शाता है जो पीढ़ियों से स्थानांतरित होता रहा है। शर्मा के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गोदना के डिजाइनों में सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक रीतियों और सांस्कृतिक प्रतीकों की गहनता निहित रहती है।

एल्विन (2019) ने जनजातीय जीवनशैली में कला के महत्व पर शोध किया है, जिसमें गोदना को प्रमुख विषय के रूप में शामिल किया गया है। उनका मानना है कि गोदना आदिवासी समाज में न सिर्फ सामाजिक संकेत है बल्कि एक आध्यात्मिक अनुशासन का रूप भी है। एल्विन इस बात पर बल देते हैं कि गोदना का अभ्यास समुदाय के धार्मिक विश्वास के साथ गहरा सम्बन्ध रखता है।

सिंह (2020) ने भारतीय जनजातियों पर आधारित व्यापक अध्ययन में गोदना का सांस्कृतिक महत्व देखा है। उनके अनुसार गोदना शरीर पर अंकित प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक संरचना, पदक्रम एवं सांस्कृतिक इतिहास को स्पष्ट करता है। गोदना न केवल विस्तृत परंपराओं का प्रतीक है बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा, विवाह, पारिवारिक मान्यताओं और जीवन के विविध अनुभवों को दिखाता है।

दुबे (2022) ने भारतीय संस्कृति में लोक कला की भूमिका का विश्लेषण किया है। उनके शोध में बताया गया है कि लोक कला समाज की आत्मा का मुक्त रूप है और गोदना लोक कला का सबसे स्पष्ट उदाहरण है। दुबे के अनुसार गोदना विशेष रूप से ग्रामीण अर्थों में सामाजिक मजबूती, परंपरा, जीवन चक्र और आध्यात्मिक सुरक्षा का प्रतीक है।

कुमार (2023) ने लोक कला और सांस्कृतिक पहचान के बीच सम्बन्ध को विश्लेषित किया है। उनके अनुसार लोक कला किसी भी समाज के मूल्यों एवं मान्यताओं का दस्तावेज होती है। गोदना अध्ययन के मुख्य केंद्रों में से एक थी क्योंकि यह शरीर पर अनुभव, संघर्ष, सामाजिक मान्यताओं और व्यक्तिगत पहचान को दर्शाने का एक अप्रतिम माध्यम है।

शर्मा (2022) ने अपने शोध में आधुनिक संदर्भ में गोदना कला की पुनरुत्थान प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। वे बताते हैं कि पारंपरिक गोदना आज के टैटू कला से मिलती–जुलती हो गई है, लेकिन इसकी सांस्कृतिक जड़ों की पहचान आज भी विद्यमान है। आधुनिक टैटू संस्कृति में गोदना के सांस्कृतिक संकेत भी शामिल होते हैं, जैसे व्यक्तिगत विश्वास, आध्यात्मिक सुरक्षा और पहचान।

सिंह (2023) के शोध में गोदना की सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया गया है। उनके अनुसार, पारंपरिक गोदना सामाजिक पदों, धर्म, जातीय मान्यताओं और सामुदायिक इतिहास को स्पष्ट करता है। वे यह भी बताते हैं कि आज गोदना केवल एक अनुष्ठान नहीं रह गया, बल्कि इसके सामाजिक अर्थ में समय के अनुरूप बदलाव आया है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. गोदना को लोक कला के रूप में परिभाषित करना।
2. गोदना कला के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आधार का अध्ययन करना।
3. गोदना के सामाजिक एवं प्रतीकात्मक अर्थ का विश्लेषण करना।
4. समकालीन संदर्भ में गोदना कला की स्थिति एवं परिवर्तन को समझना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य गोदना को एक लोक कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में समझना है। इस अध्ययन में गुणात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि गोदना कला के गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को सामने लाया जा सके।

शोध में प्राथमिक स्रोतों के रूप में विभिन्न लोक परंपराओं, जनजातीय समाजों में प्रचलित गोदना से संबंधित विश्वासों, स्त्रियों के अनुभवों और सांस्कृतिक व्यवहारों का अध्ययन किया गया है। इन प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से यह समझने की

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

कोशिश की गई है कि गोदना केवल एक शारीरिक अलंकरण नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक प्रतीक है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करता है। विशेष रूप से, यह शोध जनजातीय समुदायों में गोदना के धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है।

द्वितीयक स्रोतों के रूप में समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, लोक कला और भारतीय संस्कृति से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं और शैक्षिक वेबसाइटों का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों के माध्यम से गोदना कला के ऐतिहासिक विकास, इसके सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक प्रतीकवाद का गहन विश्लेषण किया गया है। विभिन्न विशेषज्ञों और विद्वानों के विचारों को शामिल कर इस कला के महत्व को व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

सामग्री का विश्लेषण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह देखा गया है कि गोदना कला का विकास कैसे हुआ और यह समय के साथ कैसे बदलती रही। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह समझने की कोशिश की गई है कि गोदना किस प्रकार समाज की सांस्कृतिक धारा में एकीकृत होती है और इसके विभिन्न प्रतीकात्मक अर्थ क्या हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह अध्ययन किया गया है कि गोदना कैसे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, पहचान और जीवन के अनुभवों को व्यक्त करती है, साथ ही यह समाज में स्त्रियों की भूमिका और उनके संघर्षों को भी उजागर करती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य गोदना कला को एक समग्र दृष्टिकोण से समझना है, ताकि इसे केवल एक शारीरिक कला के रूप में नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के गहरे तत्व के रूप में देखा जा सके।

5. गोदनाः अवधारणा एवं अर्थ

गोदना शब्द का अर्थ है त्वचा पर स्थायी रूप से किसी चिन्ह, आकृति या प्रतीक को उकेरना। यह कला पारंपरिक रूप से प्राकृतिक सुइयों, काँटों और वनस्पति–आधारित रंगों का उपयोग करके की जाती है। गोदना को केवल शारीरिक अलंकरण के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि यह एक गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थ से जुड़ी हुई है।

यह कला विशेष रूप से सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक स्थिति, धार्मिक आस्था और जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों का प्रतीक होती है। विभिन्न समाजों में गोदना के द्वारा व्यक्त किए जाते हैं, जैसे कि सुरक्षा, समृद्धि, और खुशहाली के लिए विश्वास, या किसी खास जीवन–घटना का प्रतीक।

गोदना न केवल व्यक्ति के शरीर पर निशान छोड़ता है, बल्कि यह समाज में उसकी पहचान और स्थान को भी दर्शाता है। उदाहरण के तौर पर, आदिवासी समाजों में यह कला अक्सर एक परिवार, समुदाय या जनजाति की परंपराओं और मान्यताओं से जुड़ी होती है। इसे समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक भी माना जाता है।

गोदना केवल एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक दस्तावेज़ के रूप में भी कार्य करता है, जो व्यक्ति और समाज के भीतर आस्था, विश्वास और परंपराओं को जीवित रखता है।

- **गोदना की परिभाषाएं–**

''गोदना वह पारंपरिक कला है जिसमें शरीर पर स्थायी रूप से चित्र उकेरे जाते हैं। यह कला केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति, धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।''– रामकुमार शर्मा

''गोदना आदिवासी समाजों में एक सांस्कृतिक अनुष्ठान है, जिसमें शरीर पर प्राकृतिक स्याही से उकेरे गए निशान न केवल सामाजिक संबंधों को व्यक्त करते हैं, बल्कि व्यक्ति की आध्यात्मिक सुरक्षा और जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं को भी दर्शाते हैं।– वेरियर एल्विन

''गोदना आदिवासी समाजों में परंपरा और पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह शारीरिक अलंकरण के बजाय एक सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वास के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्ति के जीवन यात्रा और संघर्षों को चित्रित करता है।– के. एस सिंह

''गोदना कला समाज की परंपराओं और विश्वासों का प्रतिकात्मक रूप है। यह न केवल एक शारीरिक प्रक्रिया है, बल्कि यह आत्मिक सुरक्षा और सामाजिक समृद्धि का संकेत भी है।''– एस. सी दुबे

''गोदना एक शारीरिक अलंकरण से कहीं अधिक है, यह व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान और समाज में उसकी स्थिति का प्रतीक है। इसे आदिवासी समाजों में विश्वास, सम्मान और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है।''– अरुण कुमार

6. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- **गोदना कला का इतिहास और सांस्कृतिक महत्त्वः** गोदना कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गहरा है। यह कला मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही शरीर पर चिन्ह अंकित करने की एक पारंपरिक प्रक्रिया रही है। विभिन्न समाजशास्त्रियों और नृतत्वशास्त्रियों ने गोदना की उत्पत्ति और उसके विकास पर कई तरह की परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं, लेकिन इनमें से कोई भी परिकल्पना अभी तक अंतिम रूप से स्वीकार नहीं की गई है। इसके बारे में विभिन्न दृश्टिकोण और विचार धाराएँ मौजूद हैं, जो गोदना कला के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक महत्त्व को और भी स्पष्ट करती हैं।
- **गोदना कला की उत्पत्ति के बारे में विचारः** हरबर्ट स्पेंसर का मानना था कि गोदना प्रथा का प्रारंभ मृत आत्माओं को शांति देने के उद्देश्य से हुआ था। इसके अनुसार, प्राचीन काल में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी, तो उस व्यक्ति की आत्मा को शांति मिल सके, इस विश्वास के तहत उसकी त्वचा पर विशिष्ट चिन्ह अंकित किए जाते थे। इन चिन्हों को गोदना कहा जाता था। कुछ आदिवासी जातियाँ, जैसे माको या मनोरी, भी इस परंपरा से जुड़ी हुई थीं। उनके अनुसार, उनके पूर्वजों ने युद्ध के दौरान पहचान के लिए अपने शरीर पर कोयले के निशान या खरोंचें बनाए थे, और यह प्रक्रिया धीरे–धीरे एक सांस्कृतिक प्रथा के रूप में विकसित हो गई।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

- **गोदना का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्वः** समय के साथ, गोदना का रूप बदलता गया और यह आदिवासी समाजों में एक पहचान का प्रतीक बन गया। कई जातियों और समुदायों ने इस कला को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में अपनाया और इसे शरीर पर बनाए गए स्थायी चिन्हों के रूप में देखा। गोदना न केवल सौंदर्य और कला का हिस्सा बन गया, बल्कि यह समाज में व्यक्ति की स्थिति और भूमिका का भी प्रतीक बन गया। विशेष रूप से आदिवासी समुदायों में, गोदना एक सामूहिक परंपरा बन गया, जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत पहचान के साथ–साथ सामाजिक और धार्मिक मूल्य व्यक्त करना था। लगभग ढाई से तीन दषकों पूर्व, यह माना जाता था कि हर महिला के लिए गोदना गुदवाना अनिवार्य था। यह प्रक्रिया महिला के सौंदर्य को बढ़ाने के साथ–साथ उसे सामाजिक सुरक्षा और पहचान भी देती थी। यह परंपरा पूरी दुनिया में प्रचलित रही है, और समय के साथ विभिन्न संस्कृतियों में इसके अनूठे रूप देखने को मिले हैं। भारत में गोदना कला का प्रभाव विषेश रूप से जनजातीय समाजों जैसे भील, गोंड, संथाल, कोल, मुंडा आदि में बहुत गहरा था। इन समाजों में गोदना एक व्यक्तिगत अभ्यास के रूप में नहीं, बल्कि एक सामूहिक परंपरा के रूप में प्रचलित था।
- **पश्चिमी समाज में गोदना कला का प्रभावः** वर्तमान में, गोदना कला का पश्चिमी समाजों में भी प्रभाव देखा जाता है। ब्रिटेन में राजकुमार जॉर्ज पंचम ने 1881 में अपनी बाहों पर नीले और लाल रंग के ड्रैगन का टैटू गुदवाया था, जिससे इस कला पर शाही मुहर लग गई और यह पश्चिमी समाज में भी प्रचलित हो गई। ब्रिटिश राजशाही के द्वारा इस कला को अपनाए जाने के बाद, यह कला मुख्यधारा का हिस्सा बन गई। इसी प्रकार, 1868 में जापान में मेजी राजशाही की स्थापना के बाद, इस कला का विस्तार हुआ और पश्चिमी देशों में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ी। जापान में टैटू कला के प्रचलन ने पश्चिमी देशों में भी गोदना और टैटू कला को अधिक स्वीकार्यता दी और धीरे–धीरे यह कला पूरी दुनिया में फैल गई।
- **भारत में गोदना कला का सांस्कृतिक महत्वः** भारत में गोदना कला का इतिहास लगभग 4000 साल पुराना है। मिस्र की ममियों पर गोदना के निशान पाए गए हैं, जो इस कला की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। भारत में भी कृष्ण की लीलाओं में गोदना का उल्लेख मिलता है। एक कथा के अनुसार, कृष्ण नटनी के रूप में गोपियों को गोदना गुदवाते थे, जो यह दर्शाता है कि भारत में इस कला का प्रचलन बहुत पुराना था। यह प्रथा भारत के विभिन्न हिस्सों में विशेष रूप से आदिवासी समाजों जैसे भील, गोंड, संथाल, कोल, मुंडा आदि में विकसित हुई। इन समाजों में यह परंपरा आज भी जीवित है और इसकी सांस्कृतिक महत्ता बनी हुई है।
- **गोदना और आध्यात्मिक सुरक्षाः** प्राचीन समाज में गोदना को केवल सौंदर्य से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सुरक्षा और सामाजिक पहचान से भी जोड़ा गया था। यह विश्वास प्रचलित था कि गोदना मृतक के शरीर से आत्मा के साथ जाता है, और यह आत्मा की यात्रा की सुरक्षा का प्रतीक बनता है। इसके साथ ही, गोदना किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को भी दर्शाता था। किसी व्यक्ति का गोदना गुदवाना यह संकेत था कि वह समाज में एक सम्मानित स्थान पर है और उसकी पहचान उस समाज से जुड़ी हुई है। यह एक प्रकार का सामाजिक दायित्व भी था, जिससे समाज में व्यक्ति की स्थिति का आकलन किया जाता था।
- **समाज में गोदना का सामाजिक महत्त्वः** गोदना की कला ने समय के साथ विभिन्न रूपों में विकास किया है। इसका सामाजिक महत्व कभी कम नहीं हुआ और यह आज भी प्रचलित है। भारत में विभिन्न राज्यों में यह कला अलग–अलग रूपों में पाई जाती है। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेष, उत्तर प्रदेष, बिहार, झारखंड, उड़ीसा और पष्चिम बंगाल जैसे राज्यों में यह परंपरा आदिवासी समुदायों में आम है। ये समुदाय गोदना को एक धार्मिक कृत्य के रूप में मानते हैं, जो उनके जीवन और मृत्यु के चक्र से जुड़ा होता है।
- **गोदना की कला का भविष्यः** गोदना कला आज के दौर में न केवल पारंपरिक आदिवासी समाजों में, बल्कि शहरी समाजों में भी अपनी जगह बना चुकी है। आजकल टैटू एक फैशन के रूप में देखा जाता है, लेकिन इसकी गहरी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जड़ें कभी नकारा नहीं जा सकतीं। यह कला अब पूरी दुनिया में एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का रूप ले चुकी है, जिसमें लोग अपने व्यक्तित्व, विचारों और विश्वासों को व्यक्त करने के लिए गोदना या टैटू गुदवाते हैं। गोदना अब केवल एक पारंपरिक कला नहीं रह गई, बल्कि यह एक वैश्विक सांस्कृतिक प्रवृत्ति बन चुकी है, जो समाजों की विविधता, उनकी पहचान और उनकी धरोहर को प्रदर्शित करती है। गोदना कला का इतिहास केवल एक शारीरिक कृति नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर है, जो समय के साथ विकसित हुई और आज भी जीवित है। यह हमारे इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को समझने में हमारी मदद करती है और हमें हमारे पूर्वजों की सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करती है।
- **गोदना एक लोक कला के रूप में: स्त्री जीवन और गोदनाः**गोदना कला का गहरा संबंध स्त्री जीवन से जुड़ा हुआ है। ग्रामीण समाज में महिलाएँ विवाह, मातृत्व और सामाजिक पहचान के विभिन्न अवसरों पर गोदना गुदवाती थीं। यह न केवल स्त्री की सहनशीलता और सौंदर्य को दर्शाता था, बल्कि उसकी सामाजिक भूमिका का भी प्रतीक बनता था। गोदना के माध्यम से महिलाएँ अपनी पहचान, संस्कृति और पारंपरिक मान्यताओं को व्यक्त करती थीं। **प्रतीकात्मकताः** गोदना में इस्तेमाल होने वाली आकृतियाँ, जैसे फूल, बेल, सूर्य, चंद्रमा, पशु, ज्यामितीय रेखाएँ, स्वस्तिक, ओम और देवी–देवताओं के चित्र, प्रत्येक का एक सांस्कृतिक अर्थ होता है। ये प्रतीक जीवन और प्रकृति से जुड़ी अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे उर्वरता, जीवन चक्र और समृद्धि। इन आकृतियों के माध्यम से समाज अपने धार्मिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक विश्वासों को व्यक्त करता है।

7. क्षेत्रीय विविधता

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में गोदना की शैलियाँ बहुत विविध हैं, और ये क्षेत्रीय विशेषताओं, सांस्कृतिक मान्यताओं और धार्मिक विश्वासों से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। गोदना न केवल एक शारीरिक कृति है, बल्कि यह प्रत्येक समुदाय और क्षेत्र की

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

सांस्कृतिक धरोहर और पहचान का हिस्सा भी है। गोदना की ये विभिन्न शैलियाँ भारतीय लोक संस्कृति की बहुरंगी और विविध प्रकृति को दर्शाती हैं।

- **मध्य भारत में गोदना की शैलियाँ:** मध्य भारत में गोदना में ज्यामितीय और प्रकृति–आधारित आकृतियाँ प्रचलित हैं। इन आकृतियों में मुख्यतः वृत्त, त्रिकोण, चौकोर, और अन्य ज्यामितीय रेखाएँ शामिल होती हैं। प्रकृति से संबंधित आकृतियाँ, जैसे फूल, पत्तियाँ, और वृक्ष, भी इस क्षेत्र में आम हैं। ये आकृतियाँ जीवन, उर्वरता और प्रकृति के साथ संबंध को प्रदर्शित करती हैं। यहाँ के गोदना में विशेष रूप से शरीर के विभिन्न अंगों पर यह चित्र अंकित किए जाते हैं, जैसे हाथ, पैर और कलाई। यह शैलियाँ न केवल सौंदर्य की ओर इशारा करती हैं, बल्कि इनका धार्मिक और सांस्कृतिक अर्थ भी होता है। इन चित्रों के माध्यम से व्यक्ति अपने आस्था और विश्वासों को व्यक्त करता है।
- **पूर्व भारत में गोदना की शैलियाँ:** पूर्व भारत में गोदना के डिज़ाइन में धार्मिक और सामाजिक प्रतीकों का प्रमुख स्थान है। यहाँ के लोग अक्सर अपने शरीर पर धार्मिक चिन्ह, जैसे शंख, चक्र, त्रिशूल और गदा–पदम गुदवाते हैं। वैष्णव संप्रदाय के अनुयायी शंख–चक्र और गदा–पदम जैसे प्रतीक अपने शरीर पर अंकित करते हैं, जबकि शैव संप्रदाय के लोग केवल त्रिशूल को गुदवाते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से, व्यक्ति अपने धार्मिक विश्वासों को व्यक्त करता है। इसके अलावा, पूर्व भारत में सामाजिक पहचान का भी बड़ा महत्व है, और लोग अपने सामाजिक स्थिति को दर्शाने के लिए विशेष प्रतीकों का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, गोदना न केवल धार्मिक आस्थाओं का प्रतीक है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक पहचानों का भी प्रतिनिधित्व करता है।
- **उत्तर भारत में गोदना की शैलियाँ:** उत्तर भारत में गोदना मुख्य रूप से सौंदर्य और अलंकरण प्रधान होता है। इस क्षेत्र में महिलाएँ अधिकतर गोदना को सौंदर्य बोध और आकर्षण के प्रतीक के रूप में गुदवाती हैं। यहाँ के लोग गोदना को एक व्यक्तिगत पहचान के रूप में देखते हैं और इसे शरीर के विभिन्न भागों पर सजाने के रूप में उपयोग करते हैं। यह कला रूप सामान्यतः फैशन और सजावट का हिस्सा बन चुका है। महिलाओं में यह परंपरा खासतौर पर विवाह के बाद महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह विश्वास है कि नई दुल्हन को गोदना गुदवाना आवश्यक है, क्योंकि इसे पवित्रता और सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है, और यह अनजाने में हुए पाप का शमन भी करता है।
- **दक्षिण भारत में गोदना की शैलियाँ:** दक्षिण भारत में गोदना को स्थाई टैटू के रूप में जाना जाता था, जिसे ''पचकुतरथु'' कहा जाता था। यहाँ यह परंपरा विशेष रूप से जनजातीय समुदायों के बीच प्रचलित थी। यह टैटू कला इन समुदायों की पहचान का हिस्सा मानी जाती थी। दक्षिण भारत में गोदना का उपयोग केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता था। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में 1980 के दशक में गोदना बहुत प्रचलित था और इसे जनजातियों के निशान के रूप में देखा जाता था।
- **गोदना की प्रक्रिया और तकनीक:** भारत के विभिन्न हिस्सों में गोदना की प्रक्रिया और तकनीक अलग–अलग होती है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में गोदना के लिए बबूल के कांटे का इस्तेमाल किया जाता है। घाव ठीक हो जाने पर उस जगह पर एक विशिष्ट आकृति उभर आती है। इस प्रक्रिया को सामान्यतः हाथों में कोयला, राख या रंग के मसाले भरकर किया जाता है। घाव के ठीक होने के बाद इस स्थान पर गोदना की आकृति स्थायी रूप से बन जाती है। कई जगहों पर धतूरे के दूध में काजल मिलाकर भी गोदना किया जाता है। नटस्त्रियाँ (प्राचीन काल की लोक कलाकार महिलाएँ) इस कला में विशेषज्ञ मानी जाती थीं। वह सुई से गोदना गुदवाती थीं और इस दौरान आंचलिक गीत गाती थीं, ताकि प्रक्रिया के दर्द को कम किया जा सके। यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधि भी होती थी, जहाँ महिलाएँ एक साथ बैठकर एक–दूसरे को गोदना गुदवाती थीं और एक–दूसरे के साथ समय बिताती थीं।
- **गोदना के सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ:** भारत में गोदना का धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। बैगा जनजाति के अनुसार, मृत्यु के बाद कुछ भी व्यक्ति के साथ नहीं जाता, लेकिन गोदना आत्मा के श्रृंगार के रूप में माना जाता है। यह विश्वास किया जाता था कि गोदना व्यक्ति की आत्मा को सुरक्षा प्रदान करता है और मृत्यु के बाद भी उसका असर रहता है। गोदना का यह भी विश्वास था कि यह व्यक्ति के जीवन में उन्नति और सुख–शांति लाता है।
- **समाज में गोदना की स्थिति:** आज के समाज में गोदना का महत्व पहले जैसा नहीं रहा है, लेकिन यह कला अब भी विभिन्न जनजातियों और समुदायों में जीवित है। गोदना अब केवल एक शारीरिक कला नहीं रह गई है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक धरोहर बन चुकी है, जो एक व्यक्ति की सामाजिक पहचान, विश्वासों और परंपराओं का प्रतीक है। यह कला अब फैशन और सजावट के रूप में भी प्रचलित हो गई है, और कई लोग इसे केवल सौंदर्य और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में अपनाते हैं। गोदना का इतिहास और विविधता भारतीय समाज के सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण को समझने में मदद करती है। यह कला रूप विभिन्न क्षेत्रीय मान्यताओं और धार्मिक आस्थाओं के साथ जुड़ी हुई है, और हर क्षेत्र में इसका अलग–अलग महत्व और उपयोग है। भारत में गोदना केवल एक कला रूप नहीं है, बल्कि यह एक गहरी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक प्रक्रिया है, जो आज भी प्रचलित है और भारतीय समाज की विविधता को दर्शाती है।

8. गोदना कला के बारे में मुख्य तथ्य

गोदना कला छत्तीसगढ़ की एक पारंपरिक और सांस्कृतिक धरोहर है, जो विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों जैसे बैगा, गोंड और अन्य जनजातियों में प्रचलित है। हालांकि समय के साथ यह कला अन्य राज्यों में भी फैल गई है, लेकिन इसकी जड़ें अभी भी छत्तीसगढ़ में गहरी हैं। यह कला रूप आदिवासी समाजों के जीवन और संस्कृतियों से जुड़ी हुई है, जो उनकी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक मानी जाती है।

- **प्रक्रिया:** गोदना कला में त्वचा की बाहरी परत को कुरेदकर उसमें प्राकृतिक स्याही, जैसे काजल, को डाला जाता है। यह एक कष्टकारी और समय–साध्य प्रक्रिया होती है, जिसमें कलाकार नुकीले उपकरणों का उपयोग करते हुए शरीर पर चित्र

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

और प्रतीक उकेरते हैं। ये चित्र सामान्यतः जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे सुरक्षा, स्वास्थ्य, प्रेम, या धार्मिक विश्वासों का प्रतीक होते हैं। यह प्रक्रिया शारीरिक रूप से पीड़ादायक होती है और इसमें विशेष कौशल और संयम की आवश्यकता होती है। हर गोदना के निशान का एक विशिष्ट अर्थ होता है और यह व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं, विश्वासों और अनुभवों को दर्शाता है।

- **उद्देश्यः** आदिवासी संस्कृति में गोदना को सिर्फ सजावट के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि यह आत्मा से जुड़ी एक गहरी भावना और विश्वास का प्रतीक माना जाता है। इसे न केवल सौंदर्य और अलंकरण के रूप में, बल्कि सुरक्षा और आत्मिक शांति के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। यह विश्वास है कि गोदना के माध्यम से व्यक्ति को बुरी शक्तियों से सुरक्षा मिलती है और यह मानसिक तथा शारीरिक रूप से सशक्त बनाता है। कई जनजातीय समाजों में यह विश्वास किया जाता है कि गोदना आत्मा के लिए सुरक्षा का कार्य करता है और व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों जैसे विवाह, बच्चे का जन्म, या किसी सांस्कृतिक उत्सव के अवसर पर यह किया जाता है।
- **आधुनिक रूपः** समय के साथ, गोदना कला ने अपनी पारंपरिक परंपराओं को आधुनिक रूप में बदल लिया है। अब यह कला केवल शरीर पर ही नहीं, बल्कि कपड़ों और कैनवास पर भी देखने को मिलती है। इसे अब ''गोदना पेंटिंग'' के रूप में जाना जाता है, जिसमें कलाकार पारंपरिक गोदना कला के प्रतीकों को चित्रकला के रूप में उकेरते हैं। इस आधुनिक रूप में गोदना कला का प्रयोग सजावट और कला के रूप में किया जाता है, जबकि इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गहराई को बरकरार रखा गया है। गोदना अब सिर्फ शारीरिक कला नहीं, बल्कि एक वैश्विक कला रूप बन गई है जो विभिन्न शैलियों और रूपों में प्रस्तुत की जाती है।
- **विशेषताएँः** गोदना कला का विशेष रूप से अभ्यास छत्तीसगढ़ के बस्तर, सरगुजा और कबीरधाम जिलों में होता है। ये क्षेत्र गोदना कला की पारंपरिक कृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जहां इसे आदिवासी समाजों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी निभाया जाता है। इन इलाकों में गोदना कला के डिजाइनों और प्रतीकों में सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक विश्वासों की गहरी छाप मिलती है, जो इस कला रूप को और भी विशिष्ट बनाती है। गोदना न केवल शारीरिक कला है, बल्कि यह भारतीय जनजातीय समाजों की सांस्कृतिक पहचान, विश्वासों और पारंपरिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा है।

इस प्रकार, गोदना कला केवल एक शारीरिक कृति नहीं है, बल्कि यह एक जीवित सांस्कृतिक धरोहर है, जो समाज की पहचान, संस्कृति और धार्मिक विश्वासों को संजो कर रखती है।

9. समकालीन सन्दर्भ में गोदना

समकालीन संदर्भ में, गोदना कला ने पारंपरिक लोक कला से एक नई दिशा ली है और अब यह आधुनिक टैटू संस्कृति का हिस्सा बनती हुई दिखाई देती है। हालांकि आधुनिक टैटू में मुख्य रूप से फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती है, फिर भी इसकी जड़ें पारंपरिक लोक गोदना कला में ही निहित हैं। पहले यह कला एक सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का प्रतीक हुआ करती थी, लेकिन समय के साथ अब यह फैशन और कला रूप में बदल चुकी है। गोदना अब सांस्कृतिक पुनरुद्धार, कला प्रदर्शनों और फैशन उद्योग का हिस्सा बन चुकी है। पारंपरिक गोदना के सामाजिक अर्थ में कुछ हद तक परिवर्तन आया है, लेकिन यह आज भी सांस्कृतिक महत्व को बनाए हुए है।

गोदना कला का उद्देश्य और उपयोग समय के साथ बदल गए हैं। पारंपरिक गोदना कला में शरीर पर प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर विभिन्न आकृतियाँ बनाई जाती थीं, जो न केवल सौंदर्य का प्रतीक होती थीं, बल्कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान और धार्मिक विश्वासों को भी दर्शाती थीं। यह कला आदिवासी समाजों में विशेष रूप से प्रचलित थी, जहां इसे एक सांस्कृतिक कृत्य के रूप में देखा जाता था। गोदना कला का पारंपरिक अर्थ सामाजिक पहचान, धार्मिक विश्वास और व्यक्तिगत स्थिति को व्यक्त करना था। समय के साथ, गोदना ने नया रूप लिया है और यह अब व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और फैशन का रूप बन चुकी है। आधुनिक टैटू संस्कृति ने गोदना कला को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया है, और यह अब आदिवासी समाजों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह मुख्यधारा की संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है।

गोदना एक फैशन स्टेटमेंट बन गया है, जो लोगों की व्यक्तिगत पहचान, विचार और आस्थाओं को व्यक्त करने का एक तरीका है। हालांकि, इसके पारंपरिक सांस्कृतिक और सामाजिक तत्व अब कुछ हद तक बदल चुके हैं, फिर भी गोदना कला का पुनरुद्धार और सांस्कृतिक पुनःस्थापना इसे एक नई पहचान दे रही है। यह कला अब केवल एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नहीं, बल्कि एक आधुनिक कला रूप के रूप में भी सामने आ रही है, जिसे कला प्रदर्शनों और फैशन उद्योग का हिस्सा बना दिया गया है। गोदना का यह पुनरुद्धार न केवल पश्चिमी देशों में हो रहा है, बल्कि यह अन्य देशों में भी फैल रहा है। इस प्रक्रिया में, गोदना को एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सम्मानित किया जा रहा है, और इसे आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

गोदना के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं में बदलाव आ चुका है। पारंपरिक रूप से गोदना को एक सांस्कृतिक कृत्य के रूप में देखा जाता था, जो व्यक्ति की पहचान और सामाजिक स्थिति को दर्शाता था, लेकिन अब यह कला व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का हिस्सा बन चुकी है। गोदना का उद्देश्य अब समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों को व्यक्त करने के बजाय, व्यक्तिगत पहचान, विचारों और आस्थाओं को व्यक्त करने के रूप में बदल चुका है। गोदना कला का सफर एक लंबा और परिवर्तनशील रहा है, जिसमें यह पहले सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक थी, लेकिन अब यह फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का हिस्सा बन गई है। गोदना का यह सफर आधुनिक समाज में सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवित है, जबकि पारंपरिक रूप से इसका उद्देश्य और उपयोग अलग–अलग समय और स्थानों में भिन्न रहे हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

निष्कर्ष

गोदना कला भारतीय लोक कला का एक प्राचीन और समृद्ध रूप है, जो मानव शरीर को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है। यह कला न केवल शारीरिक सौंदर्य और अलंकरण तक सीमित है, बल्कि इसके भीतर गहरे सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक अर्थ छिपे हुए हैं। गोदना के द्वारा व्यक्त किए गए प्रतीक, जैसे सूर्य, चंद्रमा, पुष्प, पशु, और अन्य आस्थाओं के प्रतीक, समाज की आस्थाओं, विश्वासों और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं। भारतीय समाज में यह कला विशेष रूप से आदिवासी समुदायों में प्रचलित है, जहां इसे एक सामाजिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक पहचान और आध्यात्मिक विश्वास का हिस्सा माना जाता है। समय के साथ, गोदना ने एक नया रूप लिया है और अब यह एक फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हो गई है।

आधुनिक संदर्भ में, गोदना कला अब केवल एक सांस्कृतिक कृत्य नहीं रह गई, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर एक फैशन और कला के रूप में प्रचलित हो चुकी है। हालांकि इसके पारंपरिक सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन अब इसे एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और पहचान के रूप में देखा जाता है। यह कला अब केवल आदिवासी समाजों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह मुख्यधारा की संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है। पश्चिमी देशों में, जहां टैटू कला पहले से प्रचलित थी, गोदना को अब एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह कला रूप अब केवल शारीरिक कला नहीं, बल्कि एक वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर बन गई है, जो विभिन्न शैलियों और रूपों में प्रस्तुत की जाती है।

गोदना कला की प्रक्रिया, जो पहले प्राकृतिक रंगों, काँटों और वनस्पति–आधारित रंगों का उपयोग करती थी, अब आधुनिक रूप में विकसित हो चुकी है। आजकल गोदना को शारीरिक अलंकरण के रूप में अपनाया जाता है, लेकिन इसकी सांस्कृतिक और धार्मिक गहराई को अब भी बरकरार रखा गया है। गोदना के प्रतीकों और डिजाइनों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की सामाजिक पहचान, धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक धरोहर को व्यक्त करना है। पहले यह कला केवल एक आदिवासी समुदाय की पहचान और परंपरा का प्रतीक थी, लेकिन अब यह कला एक वैश्विक कला रूप बन चुकी है, जो फैशन, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पुनरुद्धार का हिस्सा बन चुकी है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गोदना कला का महत्व आज भी बरकरार है। पहले यह कला व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, विश्वास और आध्यात्मिक सुरक्षा को व्यक्त करती थी। आजकल, गोदना को एक फैशन के रूप में देखा जाता है, लेकिन फिर भी यह समाज में स्त्रियों के अधिकार, उनकी स्वतंत्रता और उनके संघर्षों का प्रतीक बन चुकी है। यह कला समाज में व्यक्ति की पहचान, आस्थाओं और परंपराओं को व्यक्त करने का एक सशक्त तरीका बन गई है। गोदना कला की यह यात्रा एक लंबा और परिवर्तनशील सफर रही है, जिसमें यह पहले सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक थी, लेकिन अब यह व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और पहचान का प्रतीक बन गई है।

गोदना के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं में बदलाव भी देखा जा रहा है। पारंपरिक रूप से गोदना को एक सांस्कृतिक कृत्य के रूप में देखा जाता था, जो व्यक्ति की पहचान और सामाजिक स्थिति को दर्शाता था, लेकिन अब यह कला फैशन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का हिस्सा बन गई है। फिर भी गोदना का सांस्कृतिक महत्व अब भी कई आदिवासी समुदायों में जीवित है। गोदना की कला को आजकल एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जो इसके पारंपरिक तत्वों को भी बनाए रखता है। इस कला का भविष्य भी उज्जवल है, क्योंकि यह अब एक वैश्विक सांस्कृतिक प्रवृत्ति बन चुकी है।

इस शोध में गोदना कला के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों का अध्ययन किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह कला केवल एक शारीरिक अलंकरण नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। गोदना कला का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व समय के साथ बदलते हुए भी बरकरार है। आज के दौर में गोदना एक फैशन स्टेटमेंट और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति बन चुका है, लेकिन इसकी गहरी सांस्कृतिक जड़ें आज भी समाज में जीवित हैं। यह कला भारतीय समाज के विभिन्न आयामों को व्यक्त करती है और इसके महत्व को समझना भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधताओं को समझने में मदद करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, रामकुमार. (2021). भारतीय लोक कला और गोदना, भारतीय लोक कला विश्वविद्यालय प्रेस.
2. एल्विन, वेरियर. (2019). जनजातीय संस्कृति और कला, प्रकाशन संस्थान.
3. सिंह, के. एस. (2020). भारत की जनजातियाँ और सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय सांस्कृतिक शोध पत्रिका, 12(3), 45–58.
4. दुबे, एस. सी. (2022). भारतीय समाज और संस्कृति में लोक कला, समाजशास्त्र और संस्कृति अध्ययन, 35(2), 98–105.
5. कुमार, अरुण. (2023). लोक कला और सांस्कृतिक पहचान, भारतीय लोक अध्ययन पत्रिका, 15(1), 12–25.
6. शर्मा, आलोक. (2022). गोदना कला का पुनरुद्धार, समकालीन कला और संस्कृति पत्रिका, 8(1), 55–70.
7. सिंह, रेखा. (2023). जनजातीय समाजों में गोदना का महत्व, आधुनिक समाज और संस्कृति, 5(2), 72–85.
8. The Dictionary of Indian Art and Artists-Pratima Sheth
9. Granthaalayahpublication.org
10. Indianculture.gov.in